इकाई 17 राष्ट्र राज्यों का निर्माण-1: ब्रिटिश और फ्रांसीसी

इकाई की रूपरेखा

17.0 उद्देश्य

इस इकाई में हम, खासतौर पर 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, ब्रिटेन और फ्रांस में राष्ट्र-राज्य के निर्माण की प्रक्रिया पर विचार करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप:

- बता सकेंगे कि निरंकुश राजतंत्रों ने राष्ट्र-राज्य निर्माण की प्रक्रिया कैसे आरंभ की,
- राष्ट्रीय एकीकरण में आने वाली बाधाओं की व्याख्या कर सकेंगे,
- पूंजीवादी विकास के लिए अधिसंरचना के निर्माण का विवेचन कर सकेंगे,
- वर्ग निर्माण के जरिए राष्ट्रीय अस्मिताओं के विकास को जान सकेंगे,
- ब्रिटेन और फ्रांस में राष्ट्र-राज्यों के उदय में क्रमशः औद्योगिक क्रांति और फ्रांसीसी क्रांति की भूमिका पहचान सकेंगे,
- राज्य हस्तक्षेप के क्षेत्रों की जानकारी हासिल कर सकेंगे, और
- सामाजिक तनावों और क्षेत्रीय विविधताओं को अपनाते हुए आधुनिक जनतांत्रिक राज्यों के निर्माण पर प्रकाश डाल सकेंगे।

17.1 प्रस्तावना

उत्पादन के बदलते साधनों और खास तौर पर बुर्जुआ वर्ग के उदय के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्र-राज्यों के उदय को देखा जा सकता है। ब्रिटेन और फ्रांस में नए प्रकार का राज्य कायम होने से आधुनिकीकरण की कई समस्याओं का समाधान हो गया। दोनों देशों में राष्ट्र-राज्यों ने छोटी इकाइयों के सामाजिक और आर्थिक

एकीकरण की प्रक्रिया में योगदान दिया। पूंजीवादी विकास में राष्ट्र-राज्यों की भूमिका निर्णायक साबित हुई क्योंकि इससे राजनैतिक और आर्थिक एकीकरण में मदद मिली और हाशिए पर खड़े क्षेत्रों को पूंजीवादी आधुनिकीकरण का फायदा मिला। साथ ही साथ आर्थिक विकास के लिए राज्य को अनुकूल परिस्थिति का निर्माण करना पड़ा। औद्योगीकरण के कारण अनेक ऐसी मांगे सामने आई जिनका समाधान केंद्रीकृत नियंत्रित व्यवस्थाओं और संस्थाओं द्वारा ही किया जा सकता था। इन लोगों को सीधे पेशेवर सेना और थल सेना में नियुक्त कर इन राज्यों ने देशभक्ति का संचार किया और राष्ट्रवाद, साक्षरता, सांस्कृतिक एकरूपीकरण और सुधारों को ऊपर से आरोपित किया गया।

राष्ट्र-राज्य का उदय एक आधुनिक परिघटना है। हालांकि इसका विकास 18वीं शताब्दी के अंत और 19वीं शताब्दी में हुआ परंतु इसका जन्म आधुनिक काल से पहले हो चुका था। नौकरशाही निरंकुश राज्यों का निर्माण कर, सीमांतों को बदलकर, राज्यों की स्पष्ट सीमा रेखा निर्धारित कर क्षेत्रीय इकाइयों को मजबूत बनाने का प्रयत्न किया गया। राष्ट्र-राज्य एक बहु आयामी प्रक्रिया है परंतु इस प्रयत्न में इसके लक्षण देखे जा सकते थे। इसके अलावा बुर्जुआ वर्ग के उदय और शासक तथा शोषित के आपसी संबंधों में भी आधारभूत अंतर आया। यह कहा जा सकता है कि आधुनिक काल के पहले ब्रिटेन और फ्रांस में मजबूत राजतंत्रों के तहत निरंकुश राज्यों का उदय काफी निर्णायक साबित हुआ क्योंकि इस समय आधुनिक राज्य के निर्माण की शुरुआत ही हुई थी जिसमें उत्तर मध्य काल के कई मुद्दों को विवेक सम्मत ढंग से सुलझा लिया गया था। ब्रिटेन और फ्रांस में इन्हीं रूपांतरित निरंकुश राज्यों से राष्ट्र-राज्यों का विकास हुआ।

17.2 ब्रिटिश राष्ट्र-राज्य का निर्माण

ब्रिटिश राष्ट्र-राज्य की चौहद्दी बताना बहुत मुश्किल है क्योंकि ब्रिटेन और खासकर इंगलैंड के लोग 'राष्ट्र' की बात करते हैं तो यह हमेशा स्पष्ट नहीं होता कि उनके दिमाग में कौन सा राज्य है। बहु राष्ट्रीय राज्य के भीतर एक प्रभुत्वशाली राष्ट्र के रूप में इंगलैंड को यूनाइटेड किंगडम के नाम से जाना जाता था। 'ब्रिटिशनेस' की अवधारणा को 'इंगलिशनेस' से अलग करना आसान नहीं है। ऐसा लगता है कि वेल्स, स्कॉटिश और इंगलिश लोगों में 18वीं और 19वीं शताब्दियों के दौरान कुछ हद तक ब्रिटिश अस्मिता का विकास हुआ था। परंतु स्कॉट्स और वेल्स आज भी राजनैतिक अस्मिता की दृष्टि से ब्रिटिश राज्य से और जातीय या राष्ट्रीय अस्मिता की दृष्टि से स्कॉटलैंड या वेल्स से जुड़े हुए हैं। ब्रिटेन में मिलाए जाने के दिन से ही आयरलेंड अपनी स्वतंत्रता के लिए छटपटा रहा था।

17.2.1 एकीकरण की प्रक्रिया

केंद्रीकृत शासन प्रणाली या सरकार की स्थापना कर ट्यूडर राजवंश (1485-1603) के राजाओं ने राष्ट्र-राज्य के निर्माण का पहला प्रयत्न किया।

केंद्रीकृत प्रशासन के लिए उच्च वर्गों का सहयोग प्राप्त करने की दृष्टि से एक संस्था के रूप से संसद की भूमिका महत्वपूर्ण साबित हुई (1275 के बाद संसद की लगातार मौजूदगी का प्रमाण मिलता है)। इंगलैंड एक राजनैतिक समाज बन गया जिसमें केंद्रीकृत राजतंत्र को एकत्रित स्थानीय मांगों के साथ चलना था जिन्हें संसद में रखा जाता था। 16वीं शताब्दी के दौरान इंगलिश शहरों को एक इकाई में बांध दिया गया। राज्य ने आर्थिक नियम बनाकर अधिकांश आंतरिक बंधन हटा दिए। दो कारणों से ऐसा संभव हो सका — एक तो राजा के हाथ में शक्ति का संकेंद्रण था और दूसरे राज्य का क्षेत्रफल काफी कम था। शहरी बाजार के विस्तार से पूरे राज्य में एकीकृत बाजार की स्थापना हो गई। लंदन में खाद्यान्न की मांग बढ़ी। खाद्यान्न की आपूर्ति के लिए कृषि पर दबाव पड़ा। इस कारण गांवों में कृषीय उत्पादन के वाणिज्यिकरण और पूंजी निवेश को बढ़ावा मिला।

धार्मिक सुधारों में हुई प्रगति के कारण भी राष्ट्र-राज्य के निर्माण में मदद मिली। धार्मिक सुधारों के द्वारा राष्ट्रीय चर्च न केवल राजा के मातहत हो गया बल्कि इसके द्वारा गांव भी शहर के अधीन हो गए। यह पोप की सत्ता पर विदेशी आधिपत्य के खिलाफ उभरती भावना को प्रतिबिंबित करता था। एलिजाबेथ के शासन

काल में साहित्य के उत्थान, धार्मिक भावनाओं के प्रसार, नए सामाजिक वर्गों के उदय और बदलते राजनैतिक विचारों ने मिलकर इंगलिश राष्ट्र-राज्य का निर्माण किया। ऐंग्लिकन चर्च ने राज्य को मजबूत नींव प्रदान की। बाद में, ऐंग्लिकन पुजारियों ने धर्म प्रचारकों के जरिए जन-जन तक यह संदेश पहुंचाया कि जनता को राज्य के प्रति निष्ठावान रहना चाहिए, प्रजा को राजा का आदर और सम्मान करना चाहिए। चर्च के पुजारियों ने राजा का एक स्मारक कैलेंडर बनाया जिसमें सभी महत्वपूर्ण दिवसों पर राजा द्वारा विशेष सेवाओं का उल्लेख किया गया है। अपने प्रवचनों के दौरान धर्माधिकारी बच्चों और उनके माता-पिता को "राज्य के प्रति उनकी निष्ठा और राज्य में शांति बनाए रखने की जिम्मेदारी निभाने" की याद दिलाते थे। हालांकि, औद्योगीकरण के आगमन के बाद से चर्च के कैथोलिक विरोधी और राष्ट्रवादी आह्वान का असर कम होता चला गया।

वेल्स

1536 में इंगलैंड में वेल्स का विलयन राष्ट्रीय एकीकरण की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण कदम था। हेनरीVIII द्वारा यह आरोपित किया गया था। वेल्स को इंगलिश संसद में 24 सदस्य भेजने थे और स्थानीय स्वतंत्रता और अशांति को रोकने के लिए प्रांतीय प्रशासन की इंगलिश प्रणाली लागू की गई। इसके बावजूद 1880 के दशक के अंत तक वेल्स अपनी विशिष्ट संस्कृति ओर समाज को बनाए रखने और इंगलिश के विपरीत अपनी वेल्स पहचान और वेल्स भाषा को सुरक्षित रखने में कामयाब रहा। ऐंग्लिकन संस्कृतियों और अंग्रेजी भाषा के अतिक्रमण के खिलाफ सांस्कृतिक पुनरूत्थान के भी प्रयत्न किए गए। हालांकि औद्योगीकरण के कारण कृषक बहुल क्षेत्र आधुनिक और जनतांत्रिक समाज में परिवर्तित हो गया। खनन और उत्पादन गतिविधियों के तीव्र प्रसार का वेल्स जनता पर व्यापक प्रभाव पड़ा। शहरीकरण बढ़ा, बड़े पैमाने पर देशांतरण हुआ, मजदूर वर्ग और मजदूर आंदोलनों का जन्म हुआ, ऐंग्लिकन शिक्षा का प्रसार हुआ और इस प्रकार इंगलिश राज्य में पूरे वेल्स का विलयन हो गया।

स्कॉटलैंड

शाही राजवंशों में वैवाहिक संबंध होने के बावजूद स्कॉटलैंड और इंगलैंड एक दूसरे के शत्रु बने रहे। शताब्दियों से यह एक स्वतंत्र राज्य था। 17वीं शताब्दी में जेम्स प्रथम ने दोनों देशों के एक 'आदर्श मिलन' का प्रस्ताव रखा परंतु इंगलिश और स्कॉट्स के आपसी अविश्वास और शत्रुता के कारण यह प्रस्ताव धाराशाई हो गया। 1650 के दशक में क्रामवेलियाई एकीकरण इंगलिश सेना द्वारा जबरदस्ती थोपा गया। 1707 में ऐक्ट ऑफ यूनियन द्वारा स्कॉटलैंड को अंततः इंगलैंड में मिला लिया गया। यह स्वैच्छिक एकीकरण था जिसका स्कॉटिश संसद ने बहुमत से समर्थन किया था; इसके बाद इस संसद को समाप्त कर दिया गया। परंतु दूसरी स्कॉटिश संस्थाएं यथावत रहीं; जैसे, विशिष्ट विधि और शैक्षिक व्यवस्था तथा प्रेसबिटेरियन चर्च बने रहे।

गरीब और पिछड़े गेलिक उच्च भूमि में रहने वाले और निम्न भूमि में रहने वाले अंग्रेजभाषी स्कॉटिश लोगों की इस मिलन के प्रति प्रतिक्रिया अलग-अलग थी। इस अधिनियम को जिस तरह लागू किया था उससे कई स्कॉटिश राष्ट्रवादियों को धक्का लगा था। शताब्दियों से स्कॉटिश अस्मिता के निजता संबंधी दृष्टिकोण के कारण धीरे-धीरे एक अलग चेतना का विकास हो रहा था। लोक स्मृति में लोक नायकों की छवि मौजूद होने से इसे और बल मिला। रानी मेरी की छवि लोक-समृति में व्याप्त थी। इसके अलावा लोक गीतों और डेविड ह्यूम तथा एडम स्मिथ जैसे स्कॉटिश विचारकों के योगदानों और जेम्स वॉट जैसे वैज्ञानिकों के आविष्कारों ने पृथक स्कॉटिश अस्मिता को मजबूती प्रदान की। 19वीं शताब्दी के दौरान देश के औद्योगिक विकास के कारण पुरानी जीवन पद्धति समाप्त कर दी गई और स्कॉटलैंड की अर्थव्यवस्था को इंगलिश अर्थव्यवस्था में मिला लिया गया। औद्योगिक क्रांति की सफलता के कारण स्कॉटलैंड और वेल्स के मध्य वर्ग इंगलिश और ब्रिटिश राष्ट्र के प्रति निष्ठावान हो गए। स्कॉटलैंड के बुर्जुआ वर्ग के ब्रिटेन में विलयन का पता इस बात से चलता है कि वे स्कॉटलैंड को उत्तरी ब्रिटेन कहने लगे थे; स्कॉटलैंड में प्रथम रेलवे को नार्थ ब्रिटिश रेलवे और कई होटलों को नार्थ ब्रिटिश होटल कहा गया। 19वीं शताब्दी के अंत तक स्कॉटलैंड और वेल्स के सभी वर्गों में पूरक के रूप में नहीं बल्कि सहगामी के रूप में ब्रिटिश की अवधारणा फ़ैल चुकी थी।

आयरलैंड

आयरलैंड को ब्रिटिश राष्ट्र-राज्य में मिलाना एक बड़ी राजनैतिक असफलता थी; इससे ब्रिटिश राज्य में काफी अशांति फैली। इंगलिश भूमिपतियों ने आयरलैंड पर अंशतः कब्जा जमा लिया था और 16वीं शताब्दी के अंत तक यह वस्तुतः इंगलिश उपनिवेश बन गया। ऐंग्लिकन भूमिपतियों के खिलाफ कैथोलिक कृषकों के लगातार आंदोलन के कारण आयरलैंड में बार-बार सेना भेजनी पड़ती थी। डब्लिन स्थित आयरिश संसद वस्तुतः विजेताओं और बाहर से आकर बसे लोगों की संसद थी जो आयरलैंड के बहुसंख्यक रोमन कैथोलिक लोगों के प्रति दुराग्रह का भाव रखते थे। 1798 में आयरिश क्रांति हुई। इंगलिश सत्ताधारियों को यह भय हुआ कि कैथोलिक आयरिश फ्रांसीसी क्रांतिकारियों का समर्थन कर सकते थे। अतः आयरलैंड को औपचारिक रूप से इंगलैंड, स्कॉटलैंड और वेल्स में मिला लिया गया और 1800 में यूनाइटेड किंगडम का निर्माण हुआ।

आयरलैंड का विलयन कई कारणों से असफल रहा। इस विलयन से बेलफास्ट क्षेत्र को छोड़कर और कहीं भी तीव्र औद्योगीकरण नहीं हुआ। इंगलिश आक्रमण से वेल्स के समान ऐंग्लिकन मध्य वर्ग को प्रोत्साहन नहीं मिला। इंगलिश अधिवासियों ने आयरलैंड के कैथोलिक चर्च को दबा दिया और डब्लिन स्थित एकमात्र विश्वविद्यालय में केवल प्रोटेस्टेंट विद्यार्थी ही पढ़ सकते थे। 19वीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में आयरिश साहित्य का तेजी से विकास हुआ। इस दौरान डब्लिन में जार्ज मूर, जे.एम सिंगे, डब्ल्यू.बी.ईट्स, ज्योर्ज रसेल ओर जेम्स ज्वायस जैसे मेधावी कवियों, नाटककारों और उपन्यासकारों का उदय हुआ। इसी समय गैलिक लीग (1893) ने गैलिक को आयरिश राष्ट्र की प्रथम भाषा के रूप में स्थापित करने का प्रयत्न किया और गैलिक एथेलेटिक एसोसिएशन ने ब्रिटिश के स्थान पर परम्परागत आयरिश खेलकूद को लोकप्रिय बनाने का प्रयत्न किया। सिन-फिन राष्ट्रवादी दल (1905) का निर्माण, होमरूल आन्दोलन के प्रसार और आयरिश रिपब्लिकन सेना के नेतृत्व में लोकप्रिय राष्ट्रवादी आंदोलनों (1891-1921) के कारण आयरलैंड ब्रिटिश क्राउन के प्रति निष्ठावान रहा जबकि शेष आयरलैंड ने अपने गणतंत्र और संविधान की घोषणा की। ब्रिटिश राष्ट्र-राज्य की सांस्कृतिक नीति के तहत अंग्रेजी भाषा का पक्ष लिया गया और अल्पसंख्यक भाषाओं को निरुत्साहित किया गया। राज्य ने अलग सांस्कृतिक पहचान बनाने के लिए राष्ट्रीय प्रतीकों को प्रोत्साहित किया; उदाहरण के लिए यूनियन जैक इंगलिश, स्कॉटिश और आयरिश अस्मिताओं के सम्मिलन का प्रतीक था। प्रत्येक राज्य का अपना एक ध्वज, राष्ट्र गान और सेना होती थी और वह अन्तरराष्ट्रीय खेलों में हिस्सा लेता था।

17.2.2 राष्ट्रीय पहचान का विकास

18वीं शताब्दी के अंत और 19वीं शताब्दी के आरंभ में हुए घरेलू और बाह्य परिवर्तनों के कारण ब्रिटिश अस्मिता के बारे में व्यापक राष्ट्रीय चेतना का प्रसार हुआ। कई लोग इस युग को नए सामाजिक तनावों और नए वर्ग निर्माण का काल मानते हैं। इस युग में एक मध्यवर्गीय सामाजिक राजनैतिक पहचान का निर्माण हुआ। राष्ट्रीय स्तर पर ब्रिटिश भूमिपति संभ्रांत वर्ग सामने आया और इंगलिश मजदूर वर्ग का जन्म हुआ।

1756 से लेकर 1815 तक हुए ब्रिटिश युद्धों ने ब्रिटिश राष्ट्र के एकीकरण में योगदान दिया। सेना में अनिवार्य भर्ती और अनिवार्य सेवा के कारण लोगों में राष्ट्र-राज्य की राजनैतिक और विचारात्मक मांगों के प्रति जागरूकता पैदा हुई और औद्योगिक पूंजीवाद की जरूरतों को पूरा करने में मदद मिली।

अमेरिकी उपनिवेशों के छिन जाने के बाद वेल्स और स्कॉटलैंड में नए सिरे से रुचि जागृत हुई और इस प्रकार आंतरिक पर्यटन को बढ़ावा मिला। क्रांतिकारी युद्धों के कारण ब्रिटिश राज्य को बड़े पैमाने पर सेना में भर्ती करनी पड़ी। ब्रिटिश किंगडम के सभी हिस्सों के वयस्क पुरुषों को ब्रिटिश सेना में शामिल करने का अभियान चलाया गया। इस सेना युग में चार में से एक स्कॉटलैंडवासी ब्रिटिश सेना में कार्यरत था। युद्धों के परिणामस्वरूप संचार का तेजी से विकास हुआ। 1750 और 1800 के बीच केवल इंगलैंड में ही प्रांतीय प्रेम में तीन गुनी वृद्धि हुई। इसके परिणामस्वरूप नगरीय और राष्ट्रीय निर्देशिकाएं, राजनैतिक मानचित्र, अंग्रेजी व्याकरण की पुस्तकें और शब्दकोश तैयार किए गए। 19वीं शताब्दी के अंत में अखबारों और पत्रिकाओं में हुई प्रगति के कारण ग्लैडस्टोन और डिजरैली जैसे नेताओं को राष्ट्रीय स्तर पर उनकी बात सुनने वाले लोग मिले। दैनिक समाचार पत्रों में छपने वाली संसदीय बहसों का जनमत पर व्यापक प्रभाव पड़ा। पूरे देश में

उपन्यास का एक मध्यवर्गीय पाठक वर्ग तैयार हुआ। जी.बी.शॉ, एच.जी.वेल्स, एडगर वैलेस, एच.डी. बकल और ऐसे अनेक जाने माने लेखकों ने ब्रिटेन की साहित्यिक दुनिया को एक साथ जोड़ दिया। लोकप्रिय प्रेस, याचिका और मंच ब्रिटिश स्वतंत्रता के तीन आधारभूत स्तंभ बन गए जिनका राष्ट्रीय जीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ा।

जनसंख्या की तीव्र वृद्धि और शहरीकरण के कारण न केवल स्थानीय तौर पर देशांतरण हुआ परंतु एक खास आयु के लोगों की संख्या में भी बढ़ोत्तरी हुई। 1826 तक 60 % अंग्रेज 24 वर्ष से कम आयु के थे। इस युवा अंग्रेज पीढ़ी ने राष्ट्रवाद और उदारवाद जैसी राजनैतिक चेतना को ग्रहण किया।

ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने राष्ट्रीय गौरव की भावना का भी संचार किया। औपनिवेशिक सेनाओं के चित्रों और पोस्टकार्डों, सेना की धुनों, दरबारों के चित्रों और ब्रिटिश सम्राटों के राज्यारोहण में शामिल नतमस्तक महाराजाओं के चित्रों के माध्यम से लोकप्रिय छवियां निर्मित की गईं। स्कूलों में 1902 में एम्पायर डे को संस्थानीकृत किया गया और पाठ्य पुस्तकों में ब्रिटिश शासन के लाभों पर बल दिया गया। ग्लैस्गो (1901) और क्रिस्टल पैलेस (1911) में आयोजित शाही प्रदर्शनियों को देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग इकट्ठे हुए। इससे लोगों में एक तरह की श्रेष्ठता की भावना पैदा हुई। इस श्रेष्ठता को बनाए रखने के लिए राज्य ने नस्लवादी कानूनों का सहारा लिया।

औद्योगीकरण से मध्य वर्ग को आपार धन और शक्ति प्राप्त हुई और इसका प्रभाव सीधे राज्य और राजनीति पर पड़ा। जहां एक ओर भूमिपति वर्ग रूढ़िवादी था वहीं बुर्जुआ वर्ग परिवर्तन को तेजी से अपना रहे थे। औद्योगीकरण के कारण मिलों और खानों के मजदूरी कमाने वाले वर्ग का जन्म हुआ। मजदूरों के पास शक्ति न होने के कारण उन्होंने अपनी सुरक्षा के लिए राज्य की ओर याचना भरी दृष्टि से देखा। जब उन्हें यह महसूस हुआ कि सरकार भी राजनीतिक दबावों के तहत ही काम करती है तो उन्होंने मतों और अधिकारों की मांग की (1832 के सुधार अधिनियम ने उनकी आकाक्षांओं को जागृत किया और 1867, 1884-85 तथा 1918 के अधिनियमों के द्वारा जनतांत्रीकरण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया गया)। ओवेन, लावेट और फ्रांसिस प्लेस के नेतृत्व में हुए मजदूर वर्ग के आंदोलनों ने औद्योगिक ब्रिटेन की खामियों के प्रति सामाजिक और राष्ट्रीय जागरूकता पैदा की। सुधारवादियों ने संसद की संप्रभुता के स्थान पर जनता की संप्रभुता के सिद्धांत का प्रतिपादन किया।

17.2.3 राज्य हस्तक्षेप के क्षेत्र

प्रमुख आर्थिक क्षेत्रों में राज्य के हस्तक्षेप के कारण न केवल राष्ट्रीय एकीकरण में मदद मिली बल्कि पूंजीवादी विकास के लिए अधिसंरचना का भी निर्माण हुआ। रेलवे ने समय और स्थान के बारे में पूरी सोच में आधारभूत परिवर्तन कर दिया। जैसा कि डोनाल्ड रिग मानते हैं कि इससे मानसिक और भौतिक दोनों ही स्तरों पर संचार में तेजी आई। इसके फलस्वरूप धीरे-धीरे पूरे देश में समय का मानकीकरण हुआ और 1880 के अधिनियम के द्वारा 'रेलवे समय को ग्रीनविच समय मान लिया गया', पूरे देश को यातायात के साधनों और डाक से जोड़ दिया गया। सम्प्रेषण और समाचार के आदान-प्रदान में भी क्रांतिकारी परिवर्तन आया। इसके बाद राष्ट्रीय टेलीफोन कम्पनी की स्थापना हुई जिसने जनता को सरकार के और करीब ला दिया।

राजनैतिक दृष्टि से प्रातिनिधिक सरकार की ओर बढ़ने से राजनीति में दो बिलकुल अलग प्रकार की समस्याएं पैदा हुईं जिनका संबंध 'वर्ग' और 'जनता' से था अर्थात उच्च और मध्य वर्ग तथा संभ्रांत और गरीब वर्ग से था। हालांकि ब्रिटेन राष्ट्र में पैदा हुए सामाजिक तनावों में वर्ग संघर्ष नहीं हुआ और इसे निम्न वर्गों का सक्रिय समर्थन नहीं मिला।

इसके स्थान पर राजनैतिक दलों, विभिन्न प्रमुख समुदायों और मजदूर संघों जैसी संस्थाओं के भीतर वर्ग मतभेदों को समाविष्ट कर लिया गया। इन सामाजिक टकरावों के प्रति राज्य ने तटस्थ रवैया अपनाया; 1840 के दशक में चार्टिज्म की समस्या के समाधान में सरकार के रवैये को देखने से यह बात स्पष्ट हो जाती है। प्रजातंत्र के विकास के साथ राज्य की एक नई अवधारणा सामने आई। अब भूमिपतियों के पुराने समाज के

हितों की रक्षा करने के लिए, जनता को दबाने के लिए इसका उपयोग नहीं किया जाता था। संसदीय मत संग्रह के विस्तार से नए प्रकार का सुझाव सामने आया। **लैसेजफेयर** के अप्रतिबंधित व्यक्तिवाद के स्थान पर कल्याणकारी राज्य की एक नई अवधारणा सामने आई जिसमें यह बात उभर कर सामने आई कि समाज के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व करने वाले सामूहिक राज्य के ढांचे के अन्तर्गत ही प्रत्येक व्यक्ति को अधिकतम स्वतंत्रता दी जा सकती है।

लगातार एकीकृत होते हुए और परिष्कृत ब्रिटिश राष्ट्र और ब्रिटिश राज्य के बीच का संबंध बहुत स्पष्ट नहीं है। वेन्थम जॉन फिल्डिंग और पैट्रिक कोलोहन जैसे विचारकों के अनुसार एक अधिक एकीकृत राष्ट्र के द्वारा ही एक निगरानी राज्य का निर्माण संभव है। अन्य विचारकों का यह मानना है कि व्यापक राष्ट्रीय सौहार्द और एकरूपता से ब्रिटेन के शासकीय संभ्रांतों के नियंत्रण और वर्चस्व में बढ़ोत्तरी हुई थी। सामाजिक कल्याण या राष्ट्रीय प्रतिरक्षा जैसे किसी भी मामले में राज्य द्वारा की गई कार्यवाई से शक्तिशाली राज्य और प्रत्येक नागरिक के बीच के संबंध का नया मुद्दा सामने आया था। हालांकि ब्रिटिश राष्ट्र-राज्य ने यह स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया कि सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना से राष्ट्रवाद का प्रसार होता है और राष्ट्र-राज्य मजबूत बनता है। राज्य राष्ट्रीय जीवन में तनावों को दूर करने के लिए आर्थिक और सामाजिक न्याय की दिशा में कई प्रकार के उपाय करता है।

बोध प्रश्न 1

1) ब्रिटिश राष्ट्रीय एकीकरण के लिए उत्तरदायी प्रमुख कारकों का विवेचन कीजिए।

....

....

....

....

....

....

2) राष्ट्रीय एकीकरण की प्रक्रिया में ब्रिटिश राज्य की क्या भूमिका थी ?

....

....

....

....

....

....

....

17.3 फ्रांसीसी राष्ट्र-राज्य का निर्माण

जैसा कि आपने देखा कि ब्रिटिश राज्य का निर्माण धीरे-धीरे कई शताब्दियों में हुआ। यह एक लगातार चलने वाली प्रकिया थी। वहीं दूसरी ओर फ्रांस में यह प्रक्रिया 1789 की क्रांति के बाद शुरू हुई। क्रांति ने सिद्धांततः जिस राष्ट्रीय एकता की बात की थी उसे 19वीं शताब्दी में राज्य द्वारा यथार्थ में बदला जा सका। शहरीकरण और औद्योगीकरण के साथ-साथ साक्षरता प्रसार, आर्थिक एकीकरण, अलग-अलग सांस्कृतिक अस्मिताओं के समरूपीकरण जैसी सामाजिक और सांस्कृतिक क्रियाओं से भी इसे मदद मिली।

17.3.1 केंद्रीकृत राज्य तंत्र का जन्म

15वीं शताब्दी से ही राज्य सत्ता के केंद्रीकरण की प्रक्रिया शुरू हो चुकी थी। 100 वर्षीय युद्ध, धार्मिक युद्धों और फ्रॉन्डे विद्रोह जैसे संकटों के फलस्वरूप मध्ययुगीन राजतंत्र के स्थान पर निरंकुश राजतंत्र आकार ग्रहण करने लगा। एक स्थाई सेना, विकसित वित्तीय तंत्र, एक नौकरशाही राज्य के विशेषीकृत विभाग और वेतन भोगी शाही अधिकारियों की संस्था, जिनके पास व्यापक प्रशासनिक वित्तीय और न्यायिक अधिकार थे, आदि फ्रांसीसी निरंकुशतावाद के अनिवार्य संस्थागत लक्षण थे। राष्ट्रीय और प्रांतीय स्तरों पर फ्रांस के व्यापक राज्य ढांचे ने प्रातिनिधिक संस्थानों की भूमिका सीमित कर दी। राज्य ने केंद्रीय प्रातिनिधिक सभा, इस्टेट जेनरल से कोई सलाह नहीं ली (1614 और 1789 के बीच इसकी कोई बैठक नहीं हुई)। किसी प्रातिनिधिक सभा के अभाव में राजाओं को अपने साम्राज्य में अपनी नीतियों के लिए समर्थन जुटाने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता था। सरकार वाणिज्यिक और उत्पादन की गतिविधियों में सक्रिय रूप से हिस्सेदारी लेती रही और ब्रिटेन की तरह संरक्षणवादी कानूनों की आवश्यकता नहीं पड़ी। कोई भी ऐसी वैकल्पिक संस्था नहीं थी जिसके जरिए सम्राट के विरोध में संगठित हुआ जा सके। हालांकि राजनैतिक सत्ता का केंद्रीकरण काफी हद तक हो चुका था परंतु फ्रांस एक राजनैतिक इकाई बना रहा और 1789 में क्रांति की शुरुआत के समय यह एक पूर्ण विकसित राष्ट्र नहीं बन सका था। संस्कृति, पारिवारिक संरचना, सामाजिक विश्वास और आर्थिक गतिविधियों की दृष्टि से फ्रांस में पर्याप्त विविधता थी।

17.3.2 प्रतिद्वंद्वी अस्मिताएं

भौगोलिक इकाइयों के रूप में फ्रांस और ब्रिटेन में पर्याप्त विभिन्नता थी। फ्रांस क्षेत्रफल और जनसंख्या की दृष्टि से पूर्व-आधुनिक यूरोप में सबसे बड़ा था। यह एटलांटिक और भूमध्य सागर के बीच फैला हुआ था। यहां पर्याप्त विविधता थी परंतु संचार और परिवहन बहुत ही पिछड़ा हुआ था। शहरी और ग्रामीण जीवन के बीच के अंतर और उत्तर-पूर्व तथा देश के अन्य हिस्सों के बीच क्षेत्रीय आर्थिक विविधता के कारण 19वीं शताब्दी के अंत तक फ्रांस एक आर्थिक इकाई नहीं बन सका। उस समय तक यहां स्थानीय और क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था ही कायम थी।

आधिकारिक रिपोर्टों से यह पता चलता है कि 1870 के दशक के अन्त तक फ्रांस में मानकीकृत फ्रांसीसी भाषा आधे से अधिक लोगों के लिए विदेशी भाषा थी जो ब्रिटन, बास्क, फ्लेमिश और जर्मन भाषाएं बोलते थे। 19वीं शताब्दी के अंत में फ्रांसीसी भाषा का उत्थान हुआ और यह राष्ट्रीय भाषा बनी। इसके अलावा सांस्कृतिक दृष्टि से भी कई क्षेत्र बिलकुल अलग थे और सीमा पार के प्रांतों से उनका गहरा संबंध था। 1891 तक पूरे देश में कोई एक मान्य मानकीकृत समय भी नहीं था।

17.3.3 क्रांति और राष्ट्र-राज्य

फ्रांसीसी क्रांति के फलस्वरूप राजनैतिक राज्य को राष्ट्र-राज्य में बदलने की बात सामने आई। राजनैतिक केंद्रीकरण से क्षेत्रीय पहचान की भावना तो पनपने लगी थी परंतु इससे राष्ट्र का निर्माण नहीं हो सका था। फ्रांस के लोग 'प्रजा' तो बन गए थे परंतु 'नागरिक' न बन सके थे। वे बाशिंदे तो थे परंतु राष्ट्र के निर्माता नहीं। क्रांति की घटनाओं ने उन्हें राजनैतिक अभिनेताओं में बदल दिया और निरंकुश सत्ता और विशेषाधिकार के खिलाफ जनतांत्रिक आंदोलन ने जनता की सम्प्रभुता के सिद्धांत का प्रतिपादन किया। **मानव और नागरिक अधिकारों की उद्घोषणा** और 'वर्गों' के दमन पर सामाजिक फ्रांसीसी राष्ट्रत्व की आधारशिला रखी गई। **अधिकारों की उद्घोषणा** में कहा गयाः ''सभी प्रकार की संप्रभुता का सिद्धांत अनिवार्यतः राष्ट्र में निहित होता है।''

प्राचीन शासन व्यवस्था के अध्यारोपित राज्य के स्थान पर प्रत्यक्ष शासन पर आधारित एकीकृत राष्ट्रीय राज्य की स्थापना हुई। कराधान, सार्वजनिक कार्यों, न्याय, प्रशासनिक उपायों आदि क्षेत्रों में इसका व्यापक प्रभाव पड़ा जिन्होंने आनेवाले दशकों में फ्रांस में पूंजीवादी विकास को एक स्वरूप प्रदान किया।

क्रांति राष्ट्रीय पुनरूद्धार की ओर अग्रसर हुई। जैसा कि लिनहन्ट ने बताया है कि इस प्रक्रिया में अतीत म
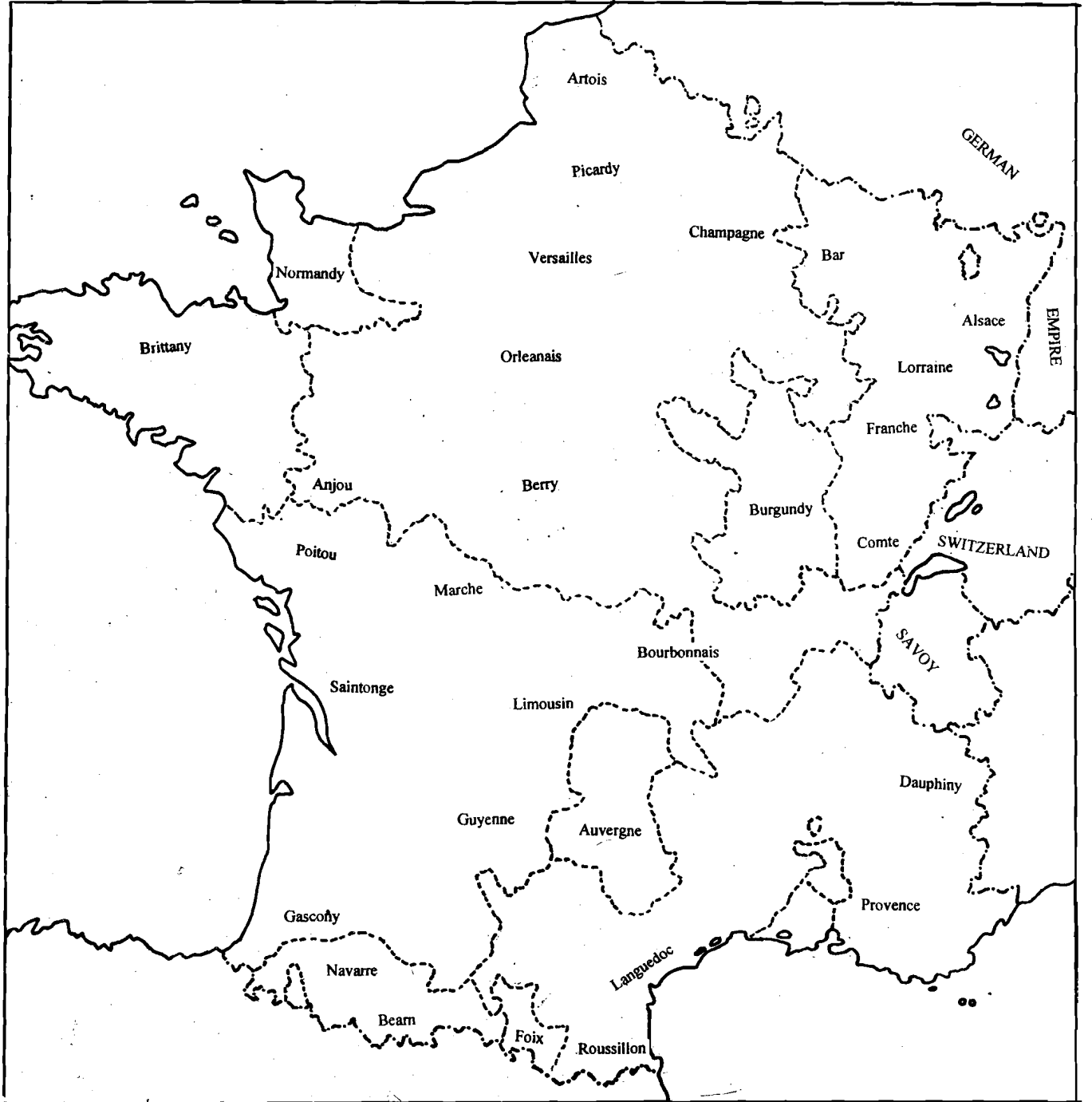
मानचित्र 2 : 18वीं शताब्दी में फ्रांस

छुटकारा पाया गया और एक नए प्रतीक, भावना और शब्दावली का विकास तथा राष्ट्रत्व की अवधारणा को केंद्र में रखा गया। क्षेत्रीय ध्वजों के स्थान पर एक तिरंगे राष्ट्रीय ध्वज का निर्माण किया गया। पेरिस और क्षेत्रीय प्रकाशनों (**जनरल डे पेरिस, मरक्यूरे, द गजट,** ब्रिसॉट का **पेट्रियोट, फ्रांसेसे** आदि जैसे अखबार) द्वारा प्रचारित राजनैतिक संस्कृति और छापाखानों के आगमन से लोग राष्ट्रीय बहसों में शामिल होने लगे। 1789 में चेनियर के प्रमुख मंचीय नाटक चार्ल्स IX ने राष्ट्रीय विधि और संविधान के नाम पर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। **प्राइजे डे ला बैस्टिले, चेने पैट्रियोटिक, फेटे डे ला लिबर्टे** जैसे कई नाटकों के द्वारा दर्शकों को राष्ट्र के करीब लाया गया। इसके बावजूद क्रांति द्वारा राष्ट्रीय प्रश्नों को पूर्णतः नहीं सुलझाया जा सका। 1870 में जाकर (जब तीसरा गणतंत्र स्थापित हुआ) औपचारिक बुर्जुआ दृष्टि से जनतांत्रिक वैधता का सिद्धांत वास्तविक रूप धारण कर सका। 19वीं शताब्दी के अंत तक दूरस्थ क्षेत्रों में रहने वाली अधिकांश ग्रामीण जनता राष्ट्रीय समुदाय का सदस्य नहीं थी। राष्ट्र निर्माण की गति धीमी थी।

नेपोलियन कालीन राज्य ने राष्ट्र और राज्य के बीच एक नए प्रकार की समता स्थापित की। राष्ट्रत्व के निर्माण के लिए राज्य को एक प्रमुख एकीकृत शक्ति के रूप में प्रयुक्त किया गया था। राष्ट्र के प्रति निष्ठा का मतलब राज्य के प्रति समर्पण माना गया। सामंतवाद का उन्मूलन, कानून के समक्ष समानता, भ्रष्ट कार्यालयों और अनुवांशिक पदों की समाप्ति और उद्यम की स्वतंत्रता जैसे निर्णायक सुधार इसी दृष्टि से लागू किए गए। कानून बनाकर निजी सम्पत्ति के सिद्धांतों, पारिवारिक सत्ता और प्रशासनिक केंद्रीकरण को बढ़ावा दिया गया। शिक्षा प्रणाली में बुर्जुआ विचारधारा को प्रमुखता दी गई जिसमें योग्यता आधारित सामाजिक संभ्रांतीकरण को बढ़ावा दिया गया। इस प्रकार नेपोलियनकालीन राज्य के आधुनिकीकरण और दृढ़ीकरण की नीतियों के फलस्वरूप पूर्ण विकसित बुर्जुआ राज्य के उदय की आधारशिला रखी गई जो 19वीं शताब्दी के अंत तक कायम रही।

17.3.4 वर्ग अस्मिताओं का निर्माण

हालांकि पश्चिमी यूरोप के कई देशों में सामाजिक और आर्थिक आधुनिकीकरण हो रहा था परंतु फ्रांस में होने वाले विकास की विशेषता यह थी कि वहां राज्य महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा था और वर्ग अस्मिताओं के विकास में क्रांति की विचारधारात्मक विरासत का महत्वपूर्ण योगदान था।

जहां तक बुर्जुआ वर्ग की वर्गीय पहचान का सरोकार है, फ्रांस में ब्रिटेन के समान राजनैतिक मामलों में सक्रियता से संलग्न बुर्जुआ वर्ग का स्वरूप बहुत स्पष्ट नहीं था। जैसा कि ब्रिटेन में एन्टीकॉर्नलीग से स्पष्ट था, भूमि संबंधी हितों से इनकी पहचान अलग नहीं की जा सकती थी । फ्रांसीसी बुर्जुआ वर्ग अन्य यूरोपीय देशों के बुर्जुआ वर्ग से इस मायने में अलग था कि उनका राज्य से निकट का संबंध था। फ्रांसीसी अर्थव्यवस्था के धीमे रूपांतरण के कारण छोटे व्यापारों का स्थायित्व और लगभग स्थिर जनसंख्या के कारण 1830 के बाद बुर्जुआ संभ्रांत वर्ग के लोगों को उच्चस्थ राजनैतिक और नौकरशाही पदों पर आसीन होने में मदद मिली। इनका विस्तार और प्रभाव राज्य के प्रभाव के साथ जुड़ गया। इस प्रकार फ्रांसीसी बुर्जुआ वर्ग लगातार राज्य के हित को पूरा करने और संरक्षित करने का प्रयास करते रहे।

फ्रांस की कृषक जनसंख्या को एक वर्ग नहीं कहा जा सकता क्योंकि कृषि समाज कई समाजों से मिलकर बना था और उनमें भौगोलिक ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से भी पर्याप्त भिन्नता थी। राज्य की राजनीति और नीतियों का प्रभाव उन पर पड़ा और उनमें कुछ बदलाव आया। 1789 का **ग्रैन्डे पेर** (बड़ा डर) और 1790 के दशक के वेन्डे और शोआन विद्रोह इसके उत्तम उदाहरण हैं। फरवरी 1848 के बाद पेरिस की राजनैतिक घटनाओं ने ग्रामीण जीवन को प्रभावित करना शुरू किया। राजनैतिक लामबंदी के जरिए कृषकों में वर्ग चेतना पैदा होने लगी। 45% भूमिकर अधिभार लगाए जाने का एक साथ विरोध किया गया और इसे शहरों द्वारा किसानों के शोषण के रूप में देखा गया। अप्रैल 1848 में किसानों ने बड़ी संख्या में मतदान में हिस्सा लिया। लुई बोनापार्ट के लिए किसानों के समर्थन और 1849 तथा 1851 के बीच जन राजनीतिकरण कृषक वर्ग के राजनैतिक संघटन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। 1870 ओर 1880 के दशकों में हुए राजनैतिकरण के कारण किसान संगठनों का महत्व तो बढ़ा परंतु इससे स्वतंत्र वर्ग चेतना का निर्माण नहीं हो सका।

19वीं शताब्दी के अंतिम दशकों में काफी दिनों तक चली आर्थिक मंदी फ्रांसीसी मजदूर वर्ग के इतिहास में एक निर्णायक युद्ध साबित हुआ। तैयार वस्तुओं के उत्पादन के क्षेत्र में सघन अन्तरराष्ट्रीय प्रतियोगिता, गिरती कीमतों, नई प्रौद्योगिकी और प्रतियोगी विधियों के कारण बड़े शहरी और हस्तशिल्प उद्योग नष्ट हो गए। छोटे कपड़ा और धातु उत्पादकों की पूंजी डूब गई और भूमिपति तथा दुकानदार दरिद्र हो गए। उन्होंने कई संगठन बनाए और राज्य से सहायता और सुरक्षा की मांग की। ऐसा लगता है कि फ्रांसीसियों को पैत्रिकवाद और निरंकुशतावाद के सिवा श्रम संबंधों के लिए कोई दूसरी प्रभावी व्यवस्था नहीं मिल पा रही थी। विभिन्न प्रतीकों और त्योहारों के जरिए इस युग में सर्वहारा वर्ग की पहचान बनाई गई। मजदूरों ने प्रतिबंधित लाल झंडे और गान**ला इन्टरनेशनल** को अपनाया जो बुर्जुआ गणतंत्र के तिरंगे और **मार्सेलेस** (फ्रांसीसी राष्ट्रीय गीत) से अलग था। 1880 से **मुर डे फेडरेस** में वार्षिक रैलियां आयोजित होने लगीं। 1879 में मार्सेल्स में आयोजित मजदूरों के एक सम्मेलन में खुले तौर पर मार्क्सवादियों और प्रोधोनवादियों के संयुक्त कार्यक्रम को अपनाया गया। मजदूरों के इन संगठनों पर राज्य के दृष्टिकोण का काफी प्रभाव पड़ा। 1895 और 1914 के बीच 20% औद्योगिक संघर्षों में फ्रांसीसी मजदूरों ने राज्य को शामिल किया।

उत्तर-क्रांतिकारी राज्य ने समाज के नियंत्रक की भूमिका अदा की। इसने सामाजिक और आर्थिक मतभेदों में हस्तक्षेप किया। जिस समय ब्रिटेन जैसे अन्य प्रमुख जनतांत्रिक राज्य नागरिक समाज की गतिविधियों से अपना हाथ खींच रहे थे उस समय फ्रांस स्वायत्त संस्थाओं के विकास को जान-बूझकर रोक रहा था। राज्य के हस्तक्षेप के कारण सामाजिक मतभेदों का अनिवार्य तौर पर राजनीतिकरण हुआ और प्रत्येक सामाजिक समूह राज्य को प्रभावित करने की कोशिश करने लगा।

17.3.5 राज्य और राष्ट्रीय एकीकरण

1830 के बाद फ्रांस के सभी शासकों ने एक एकीकृत राष्ट्र के निर्माण की प्रक्रिया में सीधे तौर पर हिस्सा लिया। राज्य ने अपने साधनों से आगे बढ़कर तथा तात्कालिक आर्थिक हितों की पूर्ति न होने से भी केवल राष्ट्रीय एकता के लिए संचार व्यवस्था की स्थापना की। राष्ट्रीय हित में मुनाफे की चिंता नहीं की गई। पुरानी शासन व्यवस्था के तहत पहली मुख्य सड़क व्यवस्था कायम की गई जो 1840 के दशक के अन्त में पूरी हुई। राज्य शक्ति को मजबूत बनाने के लिए मुख्य रेलवे व्यवस्था भी कायम की गई। इससे प्रशासनिक संप्रेषण या सेनाओं के आवागमन में सुविधा हुई। परंतु केवल रणनीतिक संचार व्यवस्था कायम होने से राष्ट्र नहीं बन सकता। स्थानीय सड़कों को नियंत्रित करने और इन्हें बनाने में छूट देने के कानून पारित किए गए। 1880 के दशक में ऐसी सड़कों का निर्माण किया गया जो सभी मौसमों में चालू रह सके। प्रथम विश्व युद्ध तक आते-आते फ्रांस के दूरस्थ क्षेत्र भी राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक गतिविधियों में शामिल हो सकते थे। सड़कों का जाल बिछाने से सीमाएं एक दूसरे के करीब आ गईं। राज्य प्रत्यक्ष रूप से राष्ट्र के आर्थिक एकीकरण का प्रयास कर रहा था।

बैंके डे फ्रांस (फ्रांसीसी बैंक) ने बड़ी संख्या में अपनी प्रांतीय शाखाएं खोलीं। इसके परिणामस्वरूप स्थानीय स्टॉक एक्सचेंज और वाणिज्यिक संस्थाएं खड़ी होने लगीं। नए शहरों और कारखानों का निर्माण हुआ और यहां फ्रांसीसी समाज नया रूप ग्रहण करने लगा। सेना ने भी राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को जानबूझकर सेना में एक साथ रखा गया और उन्हें घरों से दूर तैनात कर दिया गया। सेना की टुकड़ियों को देश के विभिन्न प्रांतों में घुमाया जाता रहा। कृषक सैनिक अपरिचित क्षेत्रों और रीति रिवाजों को देखकर चकित भी होते थे और उन्हें अपने राष्ट्र की विविधता पर गर्व भी होता था।

लोगों में एकता की भावना भरने और राष्ट्रीय स्मृति को फिर से ताजा करने के लिए फ्रांसीसी सरकार ने बड़े उत्सवों का आयोजन किया। 1830 की क्रांति की वर्षगांठ मनाई गई; 1880 में गणतंत्र ने 14 जुलाई का उत्सव आरंभ किया; गणतंत्र के नायकों (जैसे 1885 में विक्टर ह्यूगो) का समारोहपूर्ण विशिष्ट सम्मान; 1889 में क्रांति की शताब्दी महोत्सव और 1867, 1889 (इसी वर्ष पेरिस में एफिल टावर का निर्माण किया गया था) और 1900 में प्रदर्शनियां आयोजित की गईं। इसी प्रकार के आयोजन पूरे फ्रांस में शहर-शहर और गांव-गांव में आयोजित किए गए। इन आयोजनों में सेना की धुन बजाई जाती थी, आतिशबाजी छोड़ी जाती थी और लोग गलियों तथा नुक्कड़ों पर उत्सव मनाते थे।

आर्थिक और सांस्कृतिक एकीकरण के इन प्रभावों को राज्य और इसकी संस्थाओं ने प्रचारित-प्रसारित किया। राज्य, चर्च या निजी क्षेत्र के विद्यालयों ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका अदा की और उन्होंने फ्रांसीसी भाषा और देशभक्ति के मूल्यों को बढ़ावा दिया। **ले टूर डे ला फ्रांस पार डेक्स एन्फैंन्ट्स** (1877) स्कूल स्तर की सर्वाधिक लोकप्रिय पुस्तक थी। 1901 तक इसकी 60 लाख प्रतियां बिक चुकी थी। इसने युवाओं में देशभक्ति की भावना पैदा की। राज्य ने फ्रांसीसी भाषा का भी प्रचार-प्रसार किया और यह पूरे राष्ट्र की भाषा बन गई। यह फ्रांस की विभाजक संस्कृति और अलगाववादी तत्वों पर फ्रांसीसी राष्ट्र-राज्य की विजय थी।

बाहरी खतरों के जरिए भी फ्रांसीसी राष्ट्र-राज्य की भावना मजबूत हुई। फ्रांसीसी क्रांति के दौरान वालमी में नागरिकों की सेना की महान विजय के द्वारा इस भावना को मजबूत बनाने में मदद मिली। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान जर्मन आक्रमणकारियों का विरोध करते हुए पूरा राष्ट्र एकजुट हो गया और विभाजित देश में एकता का स्वर सुनाई देने लगा। हाल के वर्षों में डि गाल की फ्रांसीसी राष्ट्रीयता भी एक राष्ट्रवादी राजनैतिक आंदोलन था जो राज्य में चारों ओर आयोजित था। सोवियत यूनियन के सैन्य खतरे और संयुक्त राज्य अमेरिका की आर्थिक और सांस्कृतिक चुनौतियों का सामना करने के लिए जेनरल डि गाल ने फ्रांस के लिए मजबूत राष्ट्र-राज्य की जरूरत महसूस की ताकि देश की स्वायत्ता बरकरार रखी जा सके।

उसने न केवल सैन्य और आर्थिक शक्ति को मजबूत बनाने की वकालत की बल्कि फ्रांसीसी भाषा के 'आंग्लिकरण' और संस्कृति के अमेरिकीकरण के दोहरे खतरे से बचने के लिए फ्रांसीसी संस्कृति के पुनरुद्धार की भी बात की।

बोध प्रश्न 2

1) फ्रांसीसी राष्ट्र-राज्य के निर्माण में फ्रांसीसी क्रांति की भूमिका पर विचार कीजिए। 100 शब्दों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

2) क्रांति के पहले और क्रांति के बाद फ्रांसीसी राज्य ने राष्ट्रीय एकता कायम करने की दिशा में क्या भूमिका निभाई ?

....

....

....

....

17.4 सारांश

इस इकाई में हमने देखा कि किस प्रकार ब्रिटिश और फ्रांसीसी राष्ट्र-राज्यों का उदय हुआ। दोनों ही देशों में केंद्रीकरण की प्रक्रिया 16वीं शताब्दी में शुरू हो चुकी थी। परंतु इंग्लैंड में राष्ट्रीय एकता की अवधारणा अधिक विकसित और लगातार चलने वाली प्रक्रिया थी जबकि फ्रांस में फ्रांसीसी क्रांति के पहले तक यह मात्र एक राजनैतिक एकीकरण था। राजनैतिक बहसों से फ्रांमीसी राष्ट्र-राज्य को सैद्धांतिक ढांचा प्राप्त हुआ। राज्य ने आर्थिक एकीकरण का काम पूरा किया। ब्रिटेन में राष्ट्र-राज्य का निर्माण एक लगातार चलने वाली प्रक्रिया थी और आर्थिक एकीकरण में राज्य के साथ-साथ व्यापारिक समुदायों और उत्पादकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका थी।

वेल्स, स्कॉटलैंड और आयरलैंड को इंगलैंड में मिलाए जाने से ब्रिटिश राष्ट्र-राज्य का उदय हुआ और एक बहु राष्ट्रीय राज्य कायम हुआ। पूंजीवादी विकास और आर्थिक विकास की प्रक्रिया के द्वारा अलग-अलग अस्मिताओं की समस्याओं को काफी हद तक सुलझा लिया गया। हालांकि फ्रांसीसी राज्य को पूंजीवादी विकास का वाहक बनना पड़ा।

आपने यह भी देखा कि संसद और राजनैतिक दलों जैसी प्रातिनिधिक संस्थाओं के जरिए ब्रिटिश राज्य में पृथक वर्ग अस्मिताओं का विलयन हो गया। फ्रांस में वर्ग अस्मिताओं और वर्ग मतभेद राज्य से ही जुड़े रहे और इन्होंने फ्रांसीसी राष्ट्र-राज्य की प्रकृति निर्धारित की और इसका संबंध सामाजिक मुद्दों से भी बना रहा।

17.5 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए उपभाग 17.2.1

1) देखिए उपभाग 17.2.3

बोध प्रश्न 2

1) देखिए उपभाग 17.3.3

1) देखिए उपभाग 17.3.1 और 17.3.5